झारखंड निर्माण के बाद गठबंधन सरकार में महिलाओं की स्थिति : सन् 2000 से 2014 के विशेष संदर्भ में

पी.एच.डी उपाधि हेतु राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय में पंजीयन हेतु

प्रस्तावित शोध प्रस्ताव का सार

2020

बिनोद बिहारी महतो कोयलंचल विश्वविद्यालय, धनबाद

पर्यवेक्षक

डॉ. अमूल्य शि. सुमन बेक
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
बी.बी.एम.के यूनिवर्सिटी
धनबाद

शोधार्थी

कविता सिन्हा
अनुबंध सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
पी.के.राय मेमोरियल कॉलेज
धनबाद

झारखंड निर्माण के बाद गठबंधन सरकार में महिलाओं की स्थिति : सन् 2000 से 2014 के विशेष संदर्भ में

परिचय

जब दो या दो से अधिक राजनीतिक दल मिलकर सरकार बनाते हैं तो ऐसी सरकार को गठबंधन की सरकार कहा जाता है | ऐसे सरकार में विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग एक साझा कार्यक्रम के आधार पर एकत्रित होकर बहुमत बनाते हैं तथा मिलकर मंत्रिमण्डल का गठन करते हैं | ऐसे मंत्रिमण्डल में उन सभी दलों के प्रीतिनिधियों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किया जाता है जो सरकार बनाने में मदद करते हैं | बहुदलीय प्रणाली वाले देशों में इस प्रकार के सरकारों की संभावना अधिक होती है, क्योंकि बहुदलीय प्रणाली के कारण कोई भी एक दल आम चुनावों में पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर पता है और मिलकर सरकार बनाना उन दलों की विवशता होती है | लेकिन ऐसी सरकार में दलों के सम्मिलित होने के समीकरण बदलते रहते हैं | कुछ राजनीतिक दल एक समय सहयोगी तो दूसरे समय विरोधी भी हो सकता है | दल के इस रुख के कारण ही राजनीतिक अस्थिरता जैसा माहौल उत्पन्न हो जाता है | जो की किसी भी लोकतान्त्रिक देश के विकास मे अड़चने भी पैदा करती है |

भारत एक बहुदलीय प्रणाली वाला देश है | यहाँ राष्ट्रीय स्तर पर सात (काँग्रेस, भाकपा, बीजेपी, माकपा, बसपा, एनसीपी, अखिल भारतीय तृणमूल काँग्रेस) प्रमुख दल हैं तो वहीं क्षेत्रीय स्तर पर पूरे देश में अनेक पार्टीयाँ मौजूद है, जैसे झामुमो, आप, राजद, लोजपा, सपा, शिवसेना, एआईडीएमके आदि | देश मे राष्ट्रीय स्तर की पार्टी के साथ साथ क्षेत्रीय स्तर की पार्टी विकास मे अपना योगदान देती है | क्षेत्रीय पार्टीयों का उदय ही उस क्षेत्र की समस्याओं को देखते हुए हुआ है |

यधपि भारत के संविधान में स्पष्ट तौर पर गठबंधन सरकार के बारे में कोई प्रावधान नहीं है, लेकिन जब लोकसभा या विधानसभा के चुनाव में किसी एक दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं होती है तो इस अवस्था मे दो या उससे अधिक दल मिलकर सरकार का निर्माण करते हैं | ये दल दो प्रकार से गठबंधन करते हैं चुनाव के पहले या बाद में |

भारत में पहला आम चुनाव 1952 में हुआ | 1952 से लेकर 1976 तक केंद्र में कॉग्रेसी सरकारें रहीं और पहली बार 1977 में गैर कॉग्रेसी सरकार मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बनी| यह गठबंधन की सरकार थी | इस चुनाव में जनता पार्टी को भारी सफलता मिली |

1989 में जो लोक सभा के चुनाव हुए स्थिति उसमे बिल्कुल हीं बदल गयी क्योंकि काँग्रेस सत्ता से वंचित हो गई | गैर-काँग्रेसवाद के आधार पर गठित एक गठबंधन सरकार बनी जिसमे पाँच राजनीतिक दल- जनता दल, काँग्रेस (एस) तथा तीन राज्य स्तरीय दल - तेलगुदेशम, डीएमके तथा एजीपी ने नेशनल फ्रंट का गठन करके सरकार बनाई जिसका नेतृत्व वीपी सिंह ने किया | उसके बाद से लेकर अभी तक कहा जाए तो भारत की राजनीति मे गठबंधन सरकार का दौर आ गया है |

झारखंड, भारतीय संघ का 28वाँ राज्य है, जिसकी स्थापना 15 नवंबर 2000 को हुई | यह बिहार राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 के द्वारा अस्तित्व में आया | बिहार राज्य के 45 प्रतिशत भाग को काटकर इसका निर्माण किया गया है | इस राज्य का गठन विविध चरणों में हुए संघर्ष तथा बलिदान का परिणाम है | प्राकृतिक वैभव और प्रचुर खनिज संपदा के बावजूद यह विकास की दृष्टि से एक पिछड़ा राज्य है | यहाँ विधानसभा के लिए 81 सीटें हैं | नए राज्य बनने के बाद भारतीय जनता पार्टी तथा उसके सहयोगी दलों की साझेदारी में नई सरकार का गठन हुआ अर्थात यहाँ गठबंधन की सरकार बनी तथा बाबूलाल मराण्डी प्रथम मुख्यमंत्री बने |

यधपी राज्यों की राजनीती में गठबंधन की सरकार के दौर का प्रारम्भ 1967 के चौथे आम चुनाव के समय ही हो चुका है | 16 राज्यों में से 8 में कोई भी दल पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर सका | ये 8 राज्य थे - बिहार, पंजाब, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, केरल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा | हरियाणा में काँग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ लेकिन दल बदल होने के कारण वहाँ काँग्रेस सरकार बनाने मे असमर्थ रही | भारतीय संविधान के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ जब आठ राज्यों में गठबंधन की सरकारें बनी |

गठबंधन अब एक अपरिहार्य बाध्यता बन चुकी है[1] (सिंह, 2007, पृष्ठ संख्या -123)| यह दलील दी गई है की विखंडित जनादेश के कारण अब राष्ट्रीय पार्टीयों के वर्चस्व का युग समाप्त हो गया है और मतदाताओं की पसंद गठबंधन सरकारों के लिए है |

झारखंड मे क्षेत्रीय स्तर पर प्रमुख दल है - झामुमो, आजसु, जेवीएम आदि | यधपि इन दलों की स्थापना किसी विशेष क्षेत्र के हित को ध्यान मे रखकर किया जाता है | लेकिन जब

राज्य स्तर पर अनेक दल मिलकर सरकार बनाते हैं तो इस प्रकार के सरकारों मे अनेक ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं जिससे विकास पर प्रभाव पड़ता है, जैसे- राजनीतिक दल-बदल को बढ़ावा, राजनीतिक अस्थायित्व, नौकरशाही का प्रभुत्व, अधिक मंत्रियों का सरकार मे शामिल होना, भ्रष्टाचार को बढ़ावा, मुख्यमंत्री का प्रभावहीन होना आदि[2] (सिंहल, 2004, पृष्ठ संख्या -317-318) |

सन् 2000 से 2014 तक मे झारखंड में जो गठबंधन सरकार बनती रही उसमें राजनीतिक अस्थिरता सबसे अधिक देखने को मिली | 09 बार मुख्यमंत्री बदले तथा तीन बार राष्ट्रपति शासन लागू हुआ | इन सबका सबसे पहला शिकार झारखंड का विकास हुआ, क्योंकि एक कमजोर राजनीतिक नेतृत्व नौकरशाही को सरल, कारगर और मजबूत नहीं बना सकता | मार्च 2003 में राजनीतिक अनिश्चितताओं तथा संख्या के खेल के कारण बालूलाल मराण्डी को 18 मार्च 2003 को सत्ता छोड़ देनी पड़ी और अर्जुन मुंडा नए मुख्यमंत्री बने | तब कोई भी यह नहीं सोचा था की झारखंड की राजनीति में दबाव की यह नीति लगातार घटने वाली परिघटना का रूप ले लेगी |

राजनीतिक नेतृत्व परिवर्तन और नए मुख्यमंत्री के आने से पूरा प्रशासन में ही उलट-फेर कर दिया जाता है[3] (सिंह, 2007, पृष्ठ संख्या-122), जिससे सबसे ज्यादा कष्ट आम जनता को पहुँचती है और इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति सरकार का नेतृत्व करते रहते हैं उनके सामने पूरे राज्य को चलाना एक बहुत बड़ी चुनौती है |

किसी भी देश या समाज के विकास के लिए महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है | प्राचीन काल में नारियों को समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त था | उन्हें सुख, समृद्धि, शांति, वैभव और ज्ञान का प्रतीक माना जाता था | लेकिन धीरे-धीरे समाज में उनका सम्मान कम होता चला गया |

समकालीन भारतीय समाज में महिलाओं को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जिनमें प्रमुख हैं - लिंग भेदभाव, शिक्षा की समस्या, स्वास्थ्य एवं पोषण, धार्मिक अंधविश्वास एवं अज्ञानता, यौन शोषण तथा यौन उत्पीड़न, रोजगार की समस्या, दहेज समस्या, तलाक, नारी के प्रति हिंसा आदि |

यधपी स्वतंत्रता के बाद देश में उनकी दशा को सुधारने के लिए अनेक सामाजिक कानून बनाये गए - विशेष विवाह अधिनियम 1954, हिन्दू विवाह अधिनियम 1955, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम 1956, दहेज निरोध अधिनियम आदि[4] (सिंहल, 2008, पृष्ठ संख्या- 163-164)

वर्तमान में लोकतंत्र के कारण महिलाओं को शिक्षा की ओर, रोजगार की ओर तथा उनकी समस्याओं के समाधान की ओर विशेष बल दिया जा रहा है | राजनीति मे स्थानीय स्तर पर उन्हें आरक्षण की सुविधाएँ प्राप्त हो गयी है |

झारखंड में भी स्थानीय शासन मे महिलाओं को एक-तिहाई आरक्षण दिया गया है | उनकी दशा को सुधारने के लिए महिला आयोग बनाया गया है | कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए कानून बनाया गया है | साथ ही पुरुषों के समान उन्हें आगे लाने के लिए अनेक जागरूकता कार्यक्रम चलायें जा रहे हैं | झारखंड में उनके विकास के लिए अनेक योजनाएँ लाई गई है, जैसे - मुख्यमंत्री लाडली योजना, भीमराव आवास योजना, तेजस्विनी योजना, ग्रामीण महिला विकास योजना, विधवा पेंशन योजना आदि |

फिर भी उनकी दशा सुधारने की और अधिक आवश्यकता है तभी हमारे परिवार, समाज, राज्य, देश तथा समस्त मानवता का कल्याण हो सकता है और इसके लिए स्थिर सरकार की बहुत बड़ी भूमिका होगी जो कि स्थायी रूप से अपना कार्यकाल पूरा करें और उनकी समस्याओं के प्रति योजनाओं तथा कार्यक्रमों को ठोस रूप से लागू कर सके, उनका सर्वांगीण विकास कर सके |

<u>शोध समस्या का कथन</u>

(i) वर्तमान समय में गठबंधन की सरकार लगभग आवश्यक सी हो गई है, किसी एक पार्टी को सत्ता हासिल करना जटिल हो गया है | अतः प्रस्तुत शोध से यह पता लगाना आवश्यक हो गया है कि गठबंधन की सरकार किस प्रकार से एक स्थिर सरकार दे पायेगी और अपने कार्यकाल को पूरा कर सकेगी |

(ii) झारखंड में विभिन्न प्रकार (राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं निर्दलीय) के पार्टियों के द्वारा गठबंधन किये जाते हैं | अतः यहाँ की संस्कृति एवं परम्पराओं को संरक्षित करते हुए ऐसे न्यूनतम साझा कार्यक्रम तलाश कियें जायें जिससे विकास के मार्ग पर एवं सरकारी योजनाओं को लागू कराने में आपसी सहमति कायम की जा सके |

(iii) झारखंड विभिन जनजातियों एवं बहुसांस्कृतिक मान्यताओं का प्रदेश है | यहाँ महिलाओं के उत्थान एवं विकास दूसरे राज्यों की तुलना में काफी पिछड़े हैं, अतः ऐसे राह की तलाश जरूरी है जो महिलाओं को स्वरोजगार एवं स्वावलंबन के लिए तैयार कर सके |

(iv) शोध के माध्यम से ऐसी राह की खोज करने की प्रयास की जायेगी जिससे गठबंधन की सरकार महिलाओं के विकास हेतु सरकारी योजनाओं को वास्तविक धरातल पर उतार पाये |

साहित्य समीक्षा

शोध कार्य करने के लिए मैंने बहुत सारी पुस्तकों की समीक्षा की जिसमे गठबंधन, झारखंड की राजनीति और हालात, झारखंड के विकास तथा यहाँ के महिलाओं की स्थिति के बारे में विस्तृत वर्णन है | उनमें से कुछ प्रमुख हैं :-

कुमार (कुमार, 2017, www.mhhe.com/jharkhandekparichayle)[5] की पुस्तक भी लोगों को झारखंड के बारे में अच्छी जानकारी देती है | साथ ही यह पुस्तक छोटानागपुर, संथाल परगना आदि काश्तकारी अधिनियम के बारे में बताती है |

त्यागी और डॉ रश्मि शर्मा (त्यागी, 2011, पृष्ठ संख्या- 39-43)[6] के अनुसार गठबंधन सरकारें ऊपर से बहुत मजबूत क्यों न दिखाई दे पर अंदर से मतभिन्नता मौजूद होते हीं है | गठबंधन की सरकार की राजनीति झारखंड की राजनीति को भी देश के अन्य राज्यों के समान बहुत हीं व्यापक तौर पर प्रभावित किया है |

दीवान (दीवान, 2004, पृष्ठ संख्या- 76)[7] की पुस्तक झारखंड की महिलाओं को प्रेरित करने के लिए बहुत हीं अच्छी प्रयास है | इनके अनुसार असल चुनौती झारखंड में महिलाओं के नेतृत्व विकास को लेकर ही है |

रंजन (रंजन, 2019, पृष्ठ संख्या- 141-158)[8] की पुस्तक अपने पाठकों को झारखंड के विषय में सम्पूर्ण जानकारी देती है | सामाजिक झारखंड में वर्तमान में हुए विकास एवं परिवर्तन की तर्कपूर्ण एवं रोचक प्रस्तुति इस पुस्तक को विशिष्ट बनाती है |

सिन्हा (सिन्हा, 2016, पृष्ठ संख्या -3)[9] की पुस्तक में झारखंड की राजनीति, हालात, व्यवस्था, कार्य संस्कृति जैसी महत्वपूर्ण बातों पर पाठकों को अच्छी जानकारी देती है, लेकिन इसकी अधिकांश बातें राजनीतिक घटनाओं से जुड़ी हुई है, जिसका एकमात्र उद्देश्य यह था कि झारखंड को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है |

सिंह (सिंह, 2007, पृष्ठ संख्या- 122)[10] के अनुसार झारखंड की सरकारें अस्थिर रही है | अस्थिरता के कारण कोई भी सरकार न अच्छा शासन दे सकती है न ही नीति का बहुत अच्छे ढंग से कार्यान्वयन करने में सक्षम हो सकती है |

उपर्युक्त दिए गए सभी लेखकों ने झारखंड, राजनीतिक अस्थिरता, गठबंधन, विकास आदि पर व्यापक चर्चा की है, लेकिन कहीं भी झारखंड निर्माण के बाद गठबंधन सरकार में महिलाओं की स्थिति विषय पर व्यापक चर्चा नहीं हुई है और प्रस्तावित शोध में इसी विषय पर व्यापक प्रकाश डाला जायेगा |

समस्याएँ जिनका अन्वेषण किया जाना है

(i) झारखंड में गठबंधन की सरकार प्रारंभ काल से रही है और यह झारखंड की महिलाओं की दशा पर प्रभाव डालता है |

(ii) राजनीति में उतार चढ़ाव के कारण महिलाओं के लिए जो निर्णय लिए गए हैं वो अधूरे हैं, वे जमीनी स्तर पर लागू नहीं किए गयें हैं |

(iii) झारखंड में रहने वाले लोगों के लिए विकास सिर्फ चर्चा का विषय बन गया है | यहाँ की महिलाएँ भी इससे प्रभावित हुई है |

(iv) झारखंड की राजनीति में उनकी भागीदारिता और विकास गौण पड़ गए हैं | यहाँ 2019 के विधानसभा चुनाव में सिर्फ 12% महिलाओं को ही उम्मीदवार बनाया गया| लगभग 14% महिलाएँ ही 2019 के संसदीय चुनाव में सफलता प्राप्त कर सकी | यधपी झारखंड के स्थानीय स्वशासन में उन्हें 1/3 आरक्षण प्राप्त है, फिर भी उनकी स्थिति दयनीय एवं शोचनीय है |

शोध का उद्देश्य

(i) शोध का उद्देश्य गठबंधन सरकार में स्थिरता के आयाम एवं महिलाओं की दशा को सुधारने के प्रयासों को तलाशना है |

(ii) बदलते परिवेश में गठबंधन आवश्यक है अतः विभिन्न विचारधाराओं का सामंजस्य स्थापित कर महिलाओं के विकास की राह तलाशना है |

(iii) गठबंधन की सरकार में स्वार्थ से ऊपर उठकर महिलाओं की दशा एवं उनके उत्थान के नीति निर्धारण की खोज करना है |

(iv) सामाजिक सौहार्द एवं सामंजस्य कायम रखने के बिंदुओं को ढूँढना ताकि गठबंधन की दशा में भी सरकार महिलाओं के हित पर केंद्रित हो सके |

परिकल्पना

(i) गठबंधन की सरकार में अस्थिरता की स्थिति बन जाती है | इससे महिलाओं की स्थिति- स्वास्थ, शिक्षा, आय , रोजगार आदि के क्षेत्र में प्रभावित होती है |

(ii) गठबंधन की सरकार की दशा में महिलाओं के विकास की राह में बाधा खड़ी हो जाती है | क्योंकि महिला सुरक्षा, उनके विरुद्ध अपराध रोकने में प्रशासन ध्यान नहीं दे पता है |

(iii) गठबंधन सरकार में स्वार्थ के कारण महिलाओं के सशक्तिकरण पर सरकार ध्यान नहीं दे पाती है |

(iv) चुने हुए जनप्रतिनिधि सिर्फ अपनी कुर्सी बचाने के लिए स्वार्थी भावना तले दब जाते हैं, इससे खरीद फरोख्त बढ़ जाता है तथा शांति एवं सौहार्द भंग हो जाती है | जिससे महिलाओं पर बुरा असर पड़ता है |

महत्वपूर्ण शोध प्रश्न

1. क्या झारखंड में गठबंधन की सरकार प्रारंभ काल से रही है और राजनीतिक अस्थिरता बनी है ?
2. क्या राजनीतिक उतार-चढ़ाव के कारण सरकार के निर्णय प्रभावी नहीं रह गए हैं ?

3. क्या झारखंड में रहने वाले लोगों के लिए विकास सिर्फ चर्चा का विषय बन गया है?
4. महिलाओं की राजनीतिक भागीदारिता पर क्या प्रभाव हुआ है ?
5. महिलाओं का विकास क्या गौण पड़ गए हैं ?

शोध विधि

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए वर्णनात्मक पद्धति, अर्थात समस्या के संबंध में तथ्यों को संकलित करके विवरण प्रस्तुत करने की कोशिश की जायेगी, साथ ही क्योंकि गठबंधन का एक इतिहास रहा है अतः उसका अध्ययन करते हुए तथा झारखंड के निर्माण के इतिहास का भी अध्ययन करते हुए शोध कार्य को आगे बढ़ाया जायेगा तो इसके लिए ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा | क्योंकि झारखंड निर्माण के बाद 14 वर्षों तक यहाँ के गठबंधन सरकार तथा महिलाओं की स्थिति पर अन्वेषण हेतु वर्तमान तक में पहुँचने का प्रयास किया जायेगा अतः निश्चित रूप से तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग होगा तथा समीक्षात्मक निष्कर्ष के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए इस शोध कार्य को सम्पन्न किया जायेगा |

तथ्य संग्रहण हेतु उपकरण एवं तकनीक

क्योंकि तथ्य के दो प्रकार होते हैं - प्राथमिक तथा द्वैतीयक तथ्य अतः तथ्य को दो प्रकार से संकलित किया जाएगा :-

1. **प्राथमिक स्रोत :-**

   इसके अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्य के आधार पर तथ्य को संकलित किया जाएगा | इसके लिए निम्नलिखित प्रविधियों जैसे - अवलोकन, साक्षात्कार तथा असंरचित प्रश्नावली को शामिल किया जाएगा |

   अन्तः क्रिया के लिए क्षेत्र विशेष के प्रमुख व्यक्ति को चुना जाएगा |

2. **द्वितीयक स्रोत :-**

   इसके अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों, जर्नल, अखबार, महिला आयोग द्वारा जारी आंकड़ों, आदि का प्रयोग करते हुए शोध कार्य को पूरा किया जायेगा |

- **उपकरण :-**

  कंप्युटर, इंटरनेट, नक्शा आदि |

शोध का महत्व

(i) स्थायित्व की राह को तलाशते हुए गठबंधन की सरकार में महिलाओं के उत्थान पर ध्यान देना |

(ii) गठबंधन की सरकार में जनप्रतिनिधियों के बीच ऐसे न्यूनतम साझा कार्यक्रम निर्धारित किये जाये, जिससे गठबंधन की स्थिति में भी सरकार अपने कार्यकाल को पूरा करने में सक्षम हो साथ ही महिलाओं के विकास पर भी केन्द्रित हो |

(iii) गठबंधन की सरकार महिलाओं के बीच चेतना लाकर रोजगारोन्मुखी सर्वांगीण विकास कर सके |

(iv) समाज में द्वेष की जगह शांति और भ्रातृत्व स्थापित करने के उपाय ढूँढना जिससे महिलाओं का उत्थान हो सके |

अध्यायीकरण

सम्पूर्ण शोध पुस्तिका को सात अध्यायों में विभक्त करने का प्रस्ताव है जो इस प्रकार होगा:-

1. **अध्याय एक :-** शोध प्रस्ताव के सार से संबंधित सभी महत्वपूर्ण बातें - परिचय, शोध समस्या, उद्देश्य, प्रकल्पना, साहित्य समीक्षा, शोध पद्धति आदि |
2. **अध्याय दो :-** गठबंधन का ऐतिहासिक परिदृश्य -
   इसमें सामान्य रूप से गठबंधन से तात्पर्य, गठबंधन सरकार की केंद्र में शुरुआत, गठबंधन सरकार की भारत के अनेक राज्यों में शुरुआत तथा इसके विशेषताओं पर चर्चा की जाएगी |
3. **अध्याय तीन :-** झारखंड राज्य का निर्माण -
   इस अध्याय में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेते हुए झारखंड राज्य के निर्माण तक की विस्तृत विवेचना होगी |
4. **अध्याय चार :-** सन् 2000 से 2014 तक झारखंड में गठबंधन की सरकार -

इस अध्याय में झारखंड निर्माण से लेकर 2014 तक झारखंड में गठबंधन सरकार के बारे में विस्तृत वर्णन किया जायेगा |

5. **अध्याय पाँच :-** महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन पर गठबंधन सरकार का प्रभाव -

   इस अध्याय में झारखंड के महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए, उनके जीवन पर गठबंधन सरकार का क्या प्रभाव पड़ा इसका वर्णन किया जायेगा |

6. **अध्याय छः :-** महिलाओं के राजनीतिक जीवन पर गठबंधन सरकार का प्रभाव -

   इस अध्याय में झारखंड में उनकी राजनीतिक स्थिति का वर्णन करते हुए उनके राजनीतिक जीवन पर गठबंधन सरकार का क्या प्रभाव पड़ा इसका वर्णन किया जायेगा |

7. **अध्याय सात :-** समीक्षात्मक निष्कर्ष -

   इस अध्याय में झारखंड निर्माण से लेकर वर्तमान तक में गठबंधन सरकार की महिलाओं की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा। इसका वर्णन करते हुए सुझाव भी प्रस्तुत किया जायेगा जिससे कि गठबंधन की दशा में भी सरकारें महिलाओं की स्थिति में सुधार करते हुए कार्य कर सके |

   साथ ही उम्मीद करती हूँ कि इस शोध के माध्यम से दूसरे राज्यों के शोधार्थी विशेषकर उन राज्यों में जहाँ गठबंधन की सरकारें हैं, महिलाओं की दशा कैसे प्रभावित हुई है, उस दिशा में उन्हें शोध के कार्य हेतु मार्ग प्रशस्त होंगें तथा शोधार्थी प्रेरित होंगें |

मौजूदा ज्ञान में योगदान

गठबंधन की सरकार में होने वाले उतार-चढ़ाव एवं अस्थिरताओं की चर्चा बहुत विस्तृत तौर पर की गई है | झारखंड राज्य में गठबंधन से उत्पन्न होने वाले परिस्थितियों की भी व्यापक व्याख्या हुई है, पर झारखंड में गठबंधन की सरकार से महिलाओं की दशा पर शोध के कार्य अभी भी अछूते हैं और इस शोध के माध्यम से झारखंड में गठबंधन की सरकार बनने के बाद लगभग एक दशक से अधिक के काल में (सन् 2000 से 2014) महिलाओं के विकास प्रभावित हुए हैं, जबकि सरकारी योजनाएँ उनके विकास के उद्देश्य से लागू किए गए थे |

भविष्य के कार्य

इस शोध के माध्यम से दूसरे राज्यों के शोधार्थी विशेषकर उन राज्यों में जहाँ गठबंधन की सरकारें हैं, महिलाओं की दशा कैसे प्रभावित हुई है, उस दिशा में उन्हें शोध के कार्य हेतु मार्ग प्रशस्त होंगें | यह सोच है कि वैसे राज्यों मे भी शोध के कार्य के लिए शोधार्थी प्रेरित होंगें |